WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

शनिवार 15 अक्टूबर 2022 | अंक - 272

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

www.twitter.com/worldkhabarexpress www.facebook.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress MID DAY E-PAPER

फसल अवशेष प्रबंधन परियोजनान्तर्गत स्कूल स्तरीय विद्यार्थी जागरूकता कार्यक्रम संपन्न

कानपुर। कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर कानपुर द्वारा आज फसल अवशेष परियोजना अंतर्गत स्कूल स्तरीय विद्यार्थी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम श्री बजरंग उच्चतर माध्यमिक कॉलेज भेवान कानपुर में आयोजित किया गया। जिसमें 150 से भी अधिक छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। यह कार्यक्रम कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश के निर्देशन में संपन्न हुआ। जिसमें डॉ रामप्रकाश द्वारा बताया गया कि किसान फसल अवशेषों में आग लगा देते हैं। जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता है साथ ही साथ मृदा में पोषक तत्वों का नुकसान होता है।उन्होंने छात्र-छात्राओं को जागरूक करते हुए बताया कि पराली को खेत में मिला देने से मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान ने बताया कि खेत के अंदर जीवांश की मात्रा कम होने के कारण सब्जियों,फलों एवं अन्य फसलों में स्वाद व गुणवत्ता की बहुत कमी आ जाती है। जो कि फसल अवशेषों की खाद को मृदा में मिलाने से बढ़ाई जा सकती है। इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत द्वारा बताया गया कि पशुओं द्वारा गोबर की खाद को मिलाने व फसल अवशेषों को मिलाने से मृदा में जीवांश क्षमता बढ़ती है। डॉक्टर एके सिंह ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया कि आप अपने माता पिता को फसल अवशेष में आग लगाने से रोकें। गृह वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी एवं डॉ मिथिलेश वर्मा ने भी छात्र छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए जागरूक किया। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन पर निबंध लेखन,चित्रकला एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्रबंधक श्री नीरज कुमार ने सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया। साथ ही छात्र छात्राओं से कहा कि अपने अभिभावकों को फसल अवशेष प्रबंधन के बारे में जानकारी अवश्य दें। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक जितेंद्र कुमार, अवधेश,जितेंद्र कुमार सहित अन्य विद्यालय स्टाफ एवं कृषि वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

ग्रामीण क्षेत्रों में 71 फीसदी महिलाएं करती हैं कृषि कार्य

कानपुर, 15 अक्टूबर। कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर, कानपुर देहात में कृषक महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण कर मनाया गया। महिला किसान दिवस जब भी हम किसान शब्द सुनते हैं तो हमारे सामने सहज ही पुरुष किसानों की तस्वीर सामने आती है. हमारे दिलो-दिमाग में सालों-साल से बैठाई गई रीति-नीतियों की वजह से आज भी हम यही मानते हैं.15 अक्टूबर को जब महिला किसान दिवस मनाने की बात सोची गई तो उसके पीछे भी विचार तो यही रहा है कि एक किसान के रूप में महिलाओं के श्रम को हम तवज्जो दें. उन्हें सम्मान दे। देश में महिला किसानों की संख्या कोई कम नहीं है. भारत की जनगणना 2011 के आंकड़े बताते हैं कि देश में तकरीबन छह करोड़ महिला किसान हैं. आवधिक श्रमबल सर्वेक्षण के 2018-19 का डेटा बताता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 71.1 फ़ीसद महिलाएं कृषि क्षेत्र में काम करती हैं. वहीं, पुरुषों का प्रतिशत मात्र 53.2 प्रतिशत है. नेशनल काउंसिल ऑफ़ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च के एक दूसरे शोध के अनुसार वर्ष 2018 में देश के कृषि क्षेत्र के कुल कामगारों में महिलाओं की हिस्सेदारी 42 प्रतिशत थी, लेकिन इसके उलट यदि मालिकाना स्थिति को देखें तो वह केवल दो फीसदी जमीन की ही मालिक हैं।. परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2015-16 के निष्कर्ष बताते हैं कि 26.7 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं का वजन कम है और 54.2 प्रतिशत एनीमिक हैं। स्पष्ट रूप से हमारी अधिकांश महिला कृषि उत्पादक और श्रमिक स्वयं कुपोषण की शिकार हैं। इसी क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर, कानपुर देहात ने ग्राम सहतावन पुरवा विकास खंड मैथा में महिला कृषकों का स्वास्थ्य परीक्षण कर कुपोषण एवम उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। स्वास्थ्य परीक्षण से पता चला की महिलाएं पूरे परिवार का तो ध्यान रखती हैं किन्तु अपने स्वास्थ्य के प्रति काफी उदासीन हैं। लगभग 20-25 प्रतिशत महिलाएं रक्ताल्पता से ग्रसित हैं, जबकि 30 प्रतिशत महिलाएं कम वजन की पाई गईं। महिलाओं को जागरूक करते करते हुए केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ मिथिलेश वर्मा नेक बताया की महिलाओं को अपने स्वास्थ का भी पूर्ण ख्याल रखना चाहिए क्योंकि महिलाएं घर और खेत दोनों की जिम्मेदारी बराबरी से निभाती है इसी क्रम में डॉक्टर निमिषा अवस्थी ग्रह वैज्ञानिक ने बताया की महिलाओं को अपने वजन के अनुसार प्रतिदिन 1 ग्राम प्रति किलोग्राम शारीरिक वजन के अनुसार प्रोटीन लेना चाहिए। कार्यक्रम में डॉ अजय कुमार फसल सुरक्षा वैज्ञानिक ने कहा महिलाओं को अपने घर में गृह वाटिका लगाकर प्रतिदिन प्रति व्यक्ति के हिसाब से तीन सौ ग्राम सब्जी का प्रयोग करना चाहिए। केंद्र के अध्यक्ष डॉ रामप्रकाश ने कहा महिलाओं के स्वास्थ्य में स्वास्थ्य में हाइजीन और सैनिटेशन का बहुत महत्व है इसलिए महिलाओं को साफ सफाई का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए। कार्यक्रम में केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत के साथ 57 पुरवा की 50 महिला कृषकों ने प्रतिभाग किया

कार्यक्रम को सम्बोधित करतीं मुख्य वक्ता।

महिलाओं में एनीमिक की समस्या, स्वास्थ्य का रखें ख्याल

कानपुर। रविवार • 16 अक्टूबर • 2022

राष्ट्रीय सहारा

पूरे परिवार का ध्यान रखने वालीं हेलाएं स्वयं के स्वास्थ्य को लेकर ही उदासीन

हारा न्यूज ब्यूरो

नुर।

रवार का ध्यान रखने वाली महिलाएं के स्वास्थ्य के प्रति ही उदासीन रहती ह खुलासा शनिवार को सीएसए कृषि के दलीपनगर कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा किसान दिवस पर महिला कृषकों के वास्थ्य परीक्षण शिविर के परिणाम से शिविर में आईं 20-25 प्रतिशत एं रक्ताल्पता से ग्रसित हैं, जबकि 30 महिलाएं कम वजन की पाई गईं। विकास खंड मैथा के सहतावन पुरवा आयोजित महिला कृषकों के स्वास्थ्य शिविर में महिलाओं का कुपोषण व अधिकारों को लेकर जागरूक किया रिष्ठ गृह वैज्ञानिक डॉ.मिथिलेश वर्मा नेमिषा अवस्थी ने महिलाओं को अपने य का भी पूर्ण ख्याल रखने के लिए किया। यह इसलिए भी जरूरी है कि र व खेत-कृषि की दोहरी जिम्मेदारी से निभाती है। महिलाओं को अपने

सीएसए ने महिला किसान दिवस समारोह में लोगों को महिला किसानों के सम्मान के लिए किया प्रोत्साहित

वजन के अनुसार प्रतिदिन 1 ग्राम प्रति किग्रा शारीरिक वजन के अनुसार प्रोटीन लेने को कहा। फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार ने महिलाओं को गृह वाटिका लगाकर प्रतिदिन प्रति व्यक्ति के हिसाब से तीन सौ ग्राम सब्जी का प्रयोग करने को कहा। केन्द्र अध्यक्ष डॉ.राम प्रकाश ने महिलाओं को हाईजीन, सेनिटेशन व साफ-सफाई के महत्व से अवगत कराया।

मृदा वैज्ञानिक डॉ.खलील खान व पशुपालन वैज्ञानिक डॉ,शशिकांत ने भी विविध विन्दुओं पर महिला कृषकों को जागरूक किया। इस अवसर पर एक किसान के रूप में महिलाओं के श्रम को तवज्जो देने व उन्हें सम्मान देने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया गया।

71 प्रतिशत महिलाएं करती हैं कृषि कार्य

कानपुर (एसएनबी)। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2018-19 का डेटा बताता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 71.1 प्रतिशत महिलाएं कृषि क्षेत्र में काम करती हैं, वहीं पुरुषों का प्रतिशत मात्र 53.2 है। कृषि क्षेत्र में महिलाओं की इस विशाल संख्या का स्वास्थ्य संरक्षण बेहद जरूरी है, अन्यथा पूरा कृषि तंत्र प्रभावित हो सकता है। परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2015-16 के निष्कर्ष बताते हैं कि 26.7 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं का वजन कम है और 54.2 प्रतिशत एनीमिक हैं। स्पष्ट रूप से हमारी अधिकांश महिला कृषि उत्पादक व श्रमिक स्वयं कुपोषण की शिकार हैं।

दैनिक जागरण कानपुर 16/10/2022

के बाद जागरण इंस्टीट्यूट आफ प्राचार्य डा. अस्मिता दुबे ने किया।

फसलों की जलवायु सहिष्णु प्रजातियां विकसित कर रहे विज्ञानी

विश्व खाद्य दिवस आज

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहयोग से हो रहे अनुसंधान
- सीएसए में गेहूं की के-1616 और राई की सुरेखा प्रजाति तैयार हुई

जासं, कानपुर : जलवायु परिवर्तन से सबसे ज्यादा नुकसान अन्नदाताओं (किसानों) को उठाना पड़ रहा है। जब वर्षा होनी चाहिए, तब नहीं हो रही है और जब नहीं होनी चाहिए, तब कई दिन तक बरसात के कारण खेतों में पानी भर रहा है। जलवायु परिवर्तन और वर्षा के अनियमित चक्र के कारण किसानों का नुकसान बचाने के लिए ही कृषि विज्ञानियों ने शोधकार्य व नवीन प्रजातियों के विकास की दिशा में कदम बढ़ाया है ताकि देश में खाद्यान्न की उपज बढ़े और किसानों की आय भी बढ़ती रहे। हाल ही में चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के विज्ञानियों ने गेहूं की के-1616 व राई की सुरेखा प्रजाति विकसित की है, जबकि मक्का, दलहन, मोटे अनाजों पर शोध चल रहा है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से संबंधित संस्थानों और कृषि विश्वविद्यालयों में वर्तमान समय में विभिन्न फसलों की ऐसी प्रजातियों को विकसित करने की कोशिश की जा रही है, जो जलवायु सहिष्णु हों।

इसके लिए भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान (आइआइपीआर) में जीनोम (पौधों के जीन) संपादन व स्पीड ब्रीडिंग (तेजी से प्रजातियां विकसित करना) का केंद्र भी स्थापित किया गया है। अरहर, चना समेत अन्य दलहनी फसलों की प्रजातियों पर अनुसंधान चल रहा है। इसी तरह सीएसए में राई, दलहन, गेहूं, मक्का व मोटे अनाज (रागी) पर अनुसंधान किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डा. खलील खान ने बताया कि संस्थान की ओर से हाल ही में विकसित की गई गेहूं की प्रजाति के-1616 पूरे उत्तर प्रदेश के लिए अनुमन्य है। यह बिना सिंचाई के ही 30 से 35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक की उपज देगी। इसी तरह राई की सुरेखा प्रजाति भी उच्च तापमान को सहने की क्षमता रखती है और इसमें प्रति हेक्टेयर 28 क्विंटल तक उपज मिलेगी। अगले कुछ वर्षों में कई प्रजातियों के और विकसित होने की संभावना है।

पूर्व में आईं सीएसए की जलवायु सहिष्णु प्रजातियां

सीएसए के कुलपति डा. डीआर सिंह ने बताया कि जलवायु परिवर्तन से फसलों को बचाने और किसानों की आय बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय की ओर से लगातार शोधकार्य चल रहे हैं। पूर्व में भी गेहूं की उच्च तापमान सहने वाली प्रजातियां के-7903 (हलना) व के-9423 (उन्नत हलना) का विकास किया गया था। इसके अलावा राई की कांति, मटर की इंद्र व जय, मसूर की केएलबी-303, केएलबी-345, केएलएस-122 प्रजातियां और चने की अवरोधी, केडब्ल्यूआर-108 व केपीजी-59 विकसित की जा चुकी हैं। ये सभी प्रजातियां किसानों के लिए बेहद लाभकारी हैं। अच्छी उपज होने से इनकी काफी मांग है।

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

'स्वस्थ समाज के लिए न्याय तंत्र में भरोसा... 12

पहले के मुख्यमंत्री तो अपना दफ्तर और बंगला... 10

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्ष 14 | अंक 07
मूल्य ₹3.00/-
पेज : 12

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

रविवार | 16 अक्टूबर, 2022

फसल अवशेष न जलाने के लिए किया जागरूक

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर कानपुर द्वारा फसल अवशेष परियोजना अंतर्गत स्कूल स्तरीय विद्यार्थी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन बीते दिन शनिवार को श्री बजरंग उच्चतर माध्यमिक कॉलेज भेवान कानपुर में किया गया। केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रामप्रकाश ने बताया कि किसानों द्वारा फसल अवशेषों में आग लगाने से पर्यावरण प्रदूषित होता है। इससे बचने की जरूरत है।

दैनिक जागरण 16/10/2022

जौ से 25 तरह के व्यंजन तैयार करके बनाया रिकार्ड

जांसं, कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसएवि) के गृह विज्ञान संकाय की शोध छात्रा शालिनी पांडेय ने जौ से उत्पम व खीर समेत पोषण युक्त 25 व्यंजन बनाने का रिकार्ड बनाया है। शनिवार को विशेषज्ञों ने इन पकवानों का मूल्यांकन कर इन्हें स्वीकृति दी। गृह विज्ञान विभाग की डा. मिथिलेश वर्मा के मुताबिक छात्रा ने पीएचडी में अपना विषय 'जौ के आटे का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव' लिया था। शोध कार्य पांच साल में पूरा हुआ है।

हिंदुस्तान कानपुर 16/10/2022

सीएसए की छात्रा ने तैयार किए जौ से बने 25 व्यंजन

प्रतिभा

कानपुर, वरिष्ठ संवाददाता। व्यंजनों में पोषक तत्व बढ़ाने के लिए चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान संकाय की शोध छात्रा शालिनी पांडेय ने जौ के उत्पाद तैयार किए हैं। शनिवार को विश्वविद्यालय कैंपस में विशेषज्ञों ने इन 25 व्यंजनों का मूल्यांकन कर स्वीकृति दे दी।

शालिनी पीएचडी छात्रा हैं। उन्होंने जौ से उत्पम और खीर भी तैयार की है। खीर, पेय पदार्थ (मीठा), सत्तू, लेमन वाटर, लस्सी, खिचड़ी, पुलाव, उत्पम, पराठा, पापड़ी, डोसा, इडली, हलवा और कटलेट आदि का उपयोग अनेक अवसरों पर किया जा सकता है। छात्रा को शोध के लिए जौ विषय दिया गया था। विशेषज्ञों का कहना था कि डायबिटीज आदि रोगियों के लिए इसके कई व्यंजन बेहद उपयोगी हैं। कब्ज, दिल की बीमारियों और मोटापा समेत कई से राहत मिलती है। प्रोफेसर नीलिमा कुंवर ने बताया कि शोध का कार्य तय समय में पूरा हो गया। विशेषज्ञों में डॉ. मिथिलेश वर्मा और डॉ. विनीता सिंह उपस्थित थीं।

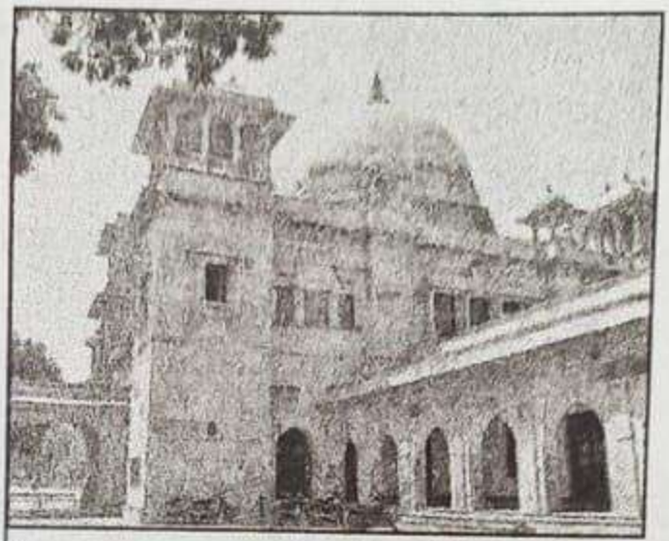

- कब्ज, दिल की बीमारियों के साथ-साथ मोटापे से भी राहत मिलने का किया गया दावा

परीक्षण कर महिला किसान दिवस मनाया

कानपुर। कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर, कानपुर देहात में कृषक महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण कर शनिवार को महिला किसान दिवस मनाया गया।वैज्ञानिकों ने कहा कि एक किसान के रूप में महिलाओं के श्रम को सम्मान देना चाहिए। महिला किसानों की संख्या देश में तकरीबन छह करोड़ है। ग्रामीण क्षेत्रों में 71.1 फ़ीसद महिलाएं कृषि क्षेत्र में काम करती हैं। 26.7 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं का वजन कम है और 54.2 प्रतिशत एनीमिक हैं।

अमर उजाला 16/10/2022

जौ से बनाए उत्तपम और खीर समेत 25 व्यंजन

संवाद न्यूज एजेंसी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के गृह विज्ञान संकाय की शोध छात्रा शालिनी पांडेय ने जौ से उत्तपम और खीर समेत पोषण युक्त 25 व्यंजन बनाए हैं। इन व्यंजनों में मीठा, नमकीन और पेय पदार्थ शामिल हैं, जिनका उपयोग नाश्ते, लंच और डिनर में किया जा सकता है।

शालिनी पांडेय।

शनिवार को कैंपस में एक्सपर्ट पैनल ने व्यंजनों का मूल्यांकन करके उनको अप्रूव किया। पीएचडी में शालिनी का विषय जौ के आटे की मानव स्वास्थ्य पर भूमिका और प्रभाव विषय पर है। उन्होंने बताया कि जौ में प्रोटीन, फाइबर, कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, फास्फोरस, पोटेशियम, सोडियम और सेलिनियम समेत कई पोषक तत्व पाए जाते हैं। जौ से बने उत्पादों का सेवन करने से कब्ज, डायबिटीज, दिल की बीमारियों और मोटापे समेत कई बीमारियों से राहत मिलती है। इस मौके पर प्रो. नीलिमा कुंवर, डॉ. मिथिलेश वर्मा मौजूद रहीं।

जौ से बने ये व्यंजन : खीर, पेय पदार्थ (मीठा), सत्तू, लेमन वाटर, लस्सी, खिचड़ी, पुलाव, उत्पम, पराठा, पापड़ी, डोसा, इडली, हलवा और कटलेट आदि।

हिंदुस्तान कानपुर 16/10/2022

परीक्षण कर महिला किसान दिवस मनाया

कानपुर। कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर, कानपुर देहात में कृषक महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण कर शनिवार को महिला किसान दिवस मनाया गया।वैज्ञानिकों ने कहा कि एक किसान के रूप में महिलाओं के श्रम को सम्मान देना चाहिए। महिला किसानों की संख्या देश में तकरीबन छह करोड़ है। ग्रामीण क्षेत्रों में 71.1 फ़ीसद महिलाएं कृषि क्षेत्र में काम करती हैं। 26.7 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं का वजन कम है और 54.2 प्रतिशत एनीमिक हैं।

आज कानपुर 16/10/2022

फसल अवशेष प्रबंधन पर स्कूल स्तरीय विद्यार्थी जागरूकता

पोस्टर लेकर जागरूक करते लोग।

कानपुर, 15 अक्टूबर। कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर कानपुर द्वारा आज फसल अवशेष परियोजना अंतर्गत स्कूल स्तरीय विद्यार्थी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम श्री बजरंग उज्चतर माध्यमिक कॉलेज भेवान कानपुर में आयोजित किया गया। जिसमें 150 से भी अधिक छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। यह कार्यक्रम कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश के निर्देशन में संपन्न हुआ। जिसमें डॉ रामप्रकाश द्वारा बताया गया कि किसान फसल अवशेषों में आग लगा देते हैं। जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता है साथ ही साथ मृदा में पोषक तत्वों का

सूचना

नुकसान होता है।उन्होंने छात्र-छात्राओं को जागरूक करते हुए बताया कि पराली को खेत में मिला देने से मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान ने बताया कि खेत के अंदर जीवांश की मात्रा कम होने के कारण सब्जियों,फलों एवं अन्य फसलों में स्वाद व गुणवत्ता की बहुत कमी आ जाती है। जो कि फसल अवशेषों की खाद को मृदा में मिलाने से बढ़ाई जा सकती है। इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत द्वारा बताया गया कि पशुओं द्वारा गोबर की खाद को मिलाने व फसल अवशेषों को मिलाने से मृदा में जीवांश क्षमता बढ़ती है। डॉक्टर एके सिंह ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया कि आप अपने माता पिता को फसल अवशेष में आग लगाने से रोके। गृह वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी एवं डॉ मिथिलेश वर्मा ने भी छात्र छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए जागरूक किया ।इस अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन पर निबंध लेखन,चित्रकला एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्रबंधक श्री नीरज कुमार ने सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया। साथ ही छात्र छात्राओं से कहा कि अपने अभिभावकों को फसल अवशेष प्रबंधन के बारे में जानकारी अवश्य दें। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक जितेंद्र कुमार, अवधेश,जितेंद्र कुमार सहित सहित अन्य विद्यालय स्टाफ एवं कृषि वैज्ञानिक उपस्थित रहे ।

हिन्दी दैनिक

रहस्य संदेश

RNI.NO.UPHIN2007/20715

8 एटा से प्रकाशित रविवार 16 अक्टूबर 2022 पृष्ठ : 8 मूल्य : 50 पैसा

फसल अवशेष प्रबंधन परियोजनान्तर्गत स्कूल स्तरीय विद्यार्थी जागरूकता कार्यक्रम संपन्न

(अम्बर अशरफ)

कानपुर (रहस्य संदेश) कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर कानपुर द्वारा आज फसल अवशेष परियोजना अंतर्गत स्कूल स्तरीय विद्यार्थी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम श्री बजरंग उच्चतर माध्यमिक कॉलेज भेवान कानपुर में आयोजित किया गया। जिसमें 150 से भी अधिक छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। यह कार्यक्रम कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश के निर्देशन में संपन्न हुआ। जिसमें डॉ रामप्रकाश द्वारा बताया गया कि किसान फसल अवशेषों में आग लगा देते हैं। जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता है साथ ही साथ मृदा में पोषक तत्वों का नुकसान होता है। उन्होंने छात्र-छात्राओं को जागरूक करते हुए बताया कि पराली को खेत में मिला देने से मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान ने बताया कि खेत के अंदर जीवांश की मात्रा कम होने के कारण सब्जियों, फलों एवं अन्य फसलों में स्वाद व गुणवत्ता की बहुत कमी आ जाती है। जो कि फसल अवशेषों की खाद को मृदा में मिलाने से बढ़ाई जा सकती है। इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत द्वारा बताया गया कि पशुओं द्वारा गोबर की खाद को मिलाने व फसल अवशेषों को मिलाने से मृदा में जीवांश मात्रा बढ़ती है। डॉक्टर एके सिंह ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया कि आप अपने माता पिता को फसल अवशेष में आग लगाने से रोकें। गृह वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी एवं डॉ मिथिलेश वर्मा ने भी छात्र छात्राओं को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए जागरूक किया इस अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन पर निबंध लेखन, चित्रकला एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्रबंधक श्री नीरज कुमार ने सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया। साथ ही छात्र छात्राओं से कहा कि अपने अभिभावकों को फसल अवशेष प्रबंधन के बारे में जानकारी अवश्य दें। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक विनोद कुमार, अवधेश, विनोद कुमार सविता सहित अन्य विद्यालय स्टाफ एवं कृषि वैज्ञानिक उपस्थित रहे।